जैन लक्षणावली भाग-१ (०१६०२१)

सम्पादक – बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री

मुख्य टाइटल

प्रकाशकीय

ग्रन्थानुक्रम

Foreword---vii

दो शब्द -- ११

सम्पादकीय -- १४

प्रस्तावना -- १-८८

लक्षणावली की उपयोगिता --- १

लक्षणावली में स्वीकृत पद्धति -- १

ग्रन्थ परिचय --- २-६९

षटखण्डागम ---२

कसायपाहुड --- ५

समयप्राभृत --- ५

प्रवचनसार -- ६

पंचास्तिकाय --- ६

नियमसार --- ७

दर्शनप्राभृत -- ७

चारित्रप्राभृत ---८

बोधप्राभृत ---८

भावप्राभृत ---८

मोक्षप्राभृत --- ९

द्वादशनुप्रेक्षा -- ११

मूलाचार --- ११

भगवती आराधना -- १५

तत्वार्थसूत्र -- १६

तत्वार्थधिगमभाष्य --- १६

पउमचरित्र -- १६

आप्तमीमांसा --- १७

युक्तनुशासन --- १७

स्वयंभूस्तोत्र ---१८

रत्नकरण्डक ---१८

सर्वार्थसिद्धि--१८

समाधितंत्र -- १९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईष्टोपदेश -- १९
तिलोयपण्णत्ती --- २०
आचारांग -- २३
सूत्रकृतांग --- २५
स्थानांग --- २५
समवायांग --- २६
व्याख्याप्रज्ञप्ति -- २६
प्रश्नव्याकरणांग --- २७
विपाकसूत्रांग --- २७
औपपातिकसूत्र-- २७
राजप्रश्नीय --- २८
जीवाजीवाभिगम --- २९
प्रज्ञापनासूत्र -- २९
सूर्यप्रज्ञप्ति -- ३०
जम्बूद्विपप्रज्ञप्ति -- ३०
उत्तराध्ययनसूत्र -- ३०
आवश्यकससूत्र ---३१
दशवैकालिक --- ३२
पिण्डनिर्युक्ति -- ३४
ओधनिर्युक्ति --- ३४
कल्पसूत्र --- ३४
बृहक्लपसूत्र --- ३६
व्यवहारसूत्र -- ३६
नन्दीसूत्र -- ३७
अनुयोगद्वार -- ३७
प्रशमरतिप्रकरण -- ३८
विशेषावश्यकभाष्य --- ३८
कर्मप्रकृति -- ३९
शतकप्रकरण --- ४०
उपदेसरत्नमाला -- ४१
जीवसमास -- ४१
ऋषिभाषित --- ४३
पाक्षिकसूत्र --- ४३
ज्योतिष्करण्डक -- ४४
दि. प्राकृत पंच संग्रह -- ४४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमात्मप्रकाश --- ४४
सन्मतिसूत्र -- ४५
न्यायावतार --- ४६
तत्वार्थवार्तिक -- ४७
लघीयस्त्रय --- ४७
न्यायविनिश्चय -- ४८
प्रमाणसंग्रह -- ४८
सिद्धिविनिश्चय -- ४८
पद्मपुराण --- ४८
वरांगचरित -- ४८
हरिवंशपुराण -- ४९
महापुराण --- ४९
प्रमाणपरीक्षा --- ५०
तत्वार्थश्लोकवार्तिक -- ५०
आत्मनुशासन --- ५०
धर्मसंग्रहणी --- ५०
उपदेशपद -- ५१
श्रावकपज्ञप्ति -- ५१
धर्मबिन्दुप्रकरण --- ५२
पंचाशक-- ५२
षडदर्शनसमुच्चय --- ५३
शास्त्रवार्तासमुच्चय -- ५३
षोडशकप्रकरण--- ५४
अष्टकानि --- ५४
योगदृष्टिसमुच्चय --- ५४
योगबिन्दु -- ५४
योगविंशिका --- ५४
पंचवस्तुक --- ५५
तत्वार्थसूत्रवृति -- ५६
भावसंग्रह --- ५६
आलापपद्धति -- ५६
तच्चसार -- ५६
नयचक्र -- ५७
आराधनासार -- ५७
श्वे, पंचसंग्रह --- ५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सन्मतिकाप्रकरण -- ५९
कर्मविपाक -- ६०
गोम्मटसार -- ६०
लब्धिसार --- ६४
त्रिलोकसार -- ६५
पंचसंग्रह संस्कृत --- ६६
जंबूद्विवपण्णत्ती --- ६७
कर्मस्तव -- ६९
षडशीति --- ६९
लक्षणावैशिष्टय --- ७०-८५
प्राकृत शब्दों की विकृति और उनका संस्कृत रुपान्तर ------------------------------------- ८६-७
शुद्धि पत्र -- ८८
जैन लक्षणावली (अ-औ) ---१-३५२
अ --- १
आ --- १६५
इ -- २२९
ई -- २३८
उ -- २४२
ऊ -- २८६
ऋ -- २८७
ए -- २९२
ऐ -- ३०१
ओ --- ३०१
औ --- ३०३
परिशिष्ट--- १-२२
लक्षणावली में उपयुक्त ग्रन्थों की अनुक्रमणिका -- १
ग्रन्थकारानुक्रमणिका -- १७
शताब्दीक्रम के अनुसार ग्रन्थकारानुक्रमणिका -- २०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org